

तया वचोनेमिसाजनया पुरुषविना न मे व म दु ॥ अ पृथ्वी वि स दे व ता द को
नि थ द को स म स्त ध र्म या इ सी न ध र्म ॥ य व पुरुष या से वा न ला इ व स्व र्गा वा
श जु यी व लि थु गु ज न स सु न रि ज्ञा न द या व ॥ ज काल व नी व नि श्व य व कं
ध र्म ज ल क्षी या न आ ज्ञा द य क लं ॥ ॥ इ ति श्री ध र्म ल क्ष्मी स षा डे न चतु र्थ
ध्या यो ॥ ४ ॥ ॥ ध र्म इ वा च ॥ भो ल क्ष्मी ह नं जी न का ने क ल पो ल स न डे
से वि ज्ञा इ ने क ल पो ल स्ता ॥ कं न्या दा न या वा का ने म नु या या य व स्का य
मु द्रा ग नां वि य जु ल सां ॥ अ ने हि ला हि ला आ न ह न ति य का व अ ने क ज

ननकुलुयकात्रवसुवियात्र॥ कंन्यादानवियात्रहोयमालथथेजिलया
नकंन्यादानवियात्रहोयायापुरो॥ देवलोकसकल्पद्विस्वर्गावासला
शीवगवहामनुष्येनजिलयातनकात्र॥ प्रतिपालयाडावन्नयीववहः
मनुष्यायातसमस्तपुरोयासिनंपुरणसाकजुल॥ जौलकीथथेयाकल
मनुष्यायातदोलदिकंन्यादानयाडापुरणदवदोलदिव्वांहरायातजो
जनयातकाफललाकगवेलसजीलयाकेदामकायात्र॥ ह्यायमसावि
यमतेवअथवागवहामनुष्यानकालतालिथुगुजमस॥ दहिदुजुयात्र

लःकी
॥६॥

हिमनेटे १२ सायमा लिङ्ग ॥ कारनमदयकं जिलया के नय सुद्धामः
तेन कारनमनलसा दोषमदुश्चते या कारान जिलया त प्रतिपालया
उवतनयमालथये या कलमनुय लोक ॥ स्वर्गावा सलायी वधकं धर्म
नलक्ष्मीया त आजादयकलं ॥ ॥ इति श्री धर्मलक्ष्मी समादे प्रभु मो
याये ॥ ५ ॥ ॥ पुनर्वाट धर्मन धर्मनलक्ष्मीया त आजादयकलं ॥
नोलक्ष्मीडे से विजा हुने मनुय लोक प्रनिसेन पुर्वज न स पाप या उ
फल न जुव पु स म स्र प का ने डे उ विजा हुने ॥ हुनं नोलक्ष्मी कदा सि

तत्तुर्वजन्मयापापयाडाफलनथुगुलिजन्मसदुःखजुयात्रचोडगुः
प्रतक्षस्वदुने॥सिजलवस्तुषुयापापनकुस्तसहिदुलाभात्रस्तुषु
यापापनथुयाजुलं॥कासत्रस्तुषुयापापनआकिनिजुलादेवनि
द्यायाडापापनसदांशेगाहाजुला॥समस्तलोवनिद्यायाडापापनः
दारिद्र्यजुलाकोजातिहवप्रसंगयाडापापनवातशेगीजुलं॥लुव
स्तुषुयापापननर्कवासजुलं॥मेवयातसहोडापापनस्तुधोल
गितासलाकिसिषुयापानषुयाषुयापुलेमाल॥परुपर्जनषुयापा ॥७॥

लःकी

पनदुसपुहितोसायमाल॥ इतवस्तुपुयापापनफेडावकतकसंवि
कोनयमालगुरुयाखिवजुयापापनसहिइसर्वागकुस्तजुलं॥ मे
वयाकलानवपुरुषवफायापापननर्कगतिजुला॥ पासाप्रनिधि
थिंपरायापापनसुरुप्यानडातकावतल॥ असलायलोचनमेव
यानप्रफेडापापनदुसातसकोचकुयावडुलावतकलं॥ गुप्तप्र
प्रकासयोडापापननुगलसफाहाना॥ इतवतकलं॥ मोलक्षीः
थतेयानिमित्तिनमनसांकर्मना॥ पापकर्मयायमतेवमतेले

प्रकोटानुनायायमालधकं धर्मनलक्ष्मीयान्त आजाटयलं ॥
~~इति श्री धर्मलक्ष्मीयान्तादेवप्रसादाय ॥ ६ ॥~~ ॥ हनंधर्मलक्ष्मीन
धर्मयान्त आजाटयक ॥ नोलक्ष्मीजेनडेने इच्छातुनी द्रुयाडानसुख
जुलाद्रुयाडानदुःखजुला ॥ द्रुयाडानवृक्षानकावमदिसांत्यानुमना
ससृष्टिजुकोयाडानमोना ॥ विष्णुनटस अतारकायावृक्षायदुःख
सिला श्रीमहादेवनकायनिष्ठाफोडानजुला ॥ ननु सुर्यो दिगा ॥ लक्ष्मी
ल्लोकपालग्रहक्षत्रशसि समस्तदिगा ॥ दुतुदुलावृक्षायजु ॥ ८ ॥

लक्ष्मि माता न समुद्र तट को प्रवृत्त तट को द्वाय कुवु या वं चो नाहु याहु
मिन जी तान का ने माल ध कं लक्ष्मी न धर्म या के आ जा ट य क लं ॥ ॥
धर्म उवाच ॥ धनं ली धर्म न आ जा ट य क लं ॥ श्री लक्ष्मी दे स वि आ हु
ने मनु या लोक पनी सम स्र लोक यां ॥ गये दुःख सुख जु ला थ या प्र जीः
न क ने दे स वि आ हु ने ॥ अत्र सान ध व २ ना निस वी को जु ला थ व आ
निस वी को मनु य म दु ॥ न व व ड चि कि ध ड धा य म दु धि कि स हं सं दे ह
का स वि आ य मु माल ॥ ओ ई व ट यी जु ल तो स न जु यु व दुःख जु यु व थ
का

तेसमस्तधनधननात्रिकर्मयाफलजुयुय ॥ वंसादिवपनीजुलसां
 मनुष्यलोकपनिजुलसांयत्त २ कर्मयाफलजुला ॥ धत्तेसमस्तमाः
 मयागद्वसदस्यनिसंक्रपालसदैवतनालनोयावद्वगु ॥ धत्त २
 तुर्जजन्मसखुदु कर्मयातुगु कर्मयाफल ॥ धुगुलिजन्मसकेडा
 वत्तलाधत्तेयानिमित्तिनलोकपनिसेन ॥ नुगलनपाप्रकर्मयायम
 तद्वसदांसतेकर्मयायमाल ॥ धत्त २ कर्मनलक्ष्मीयातमाज्ञादयत्त
 लं ॥ ॥ इति याज्ञिकीसंज्ञादयत्त ॥ ७ ॥ ॥ धत्त २ कर्मदत्ता